Prof. Vijendra Singh

संयुक्तांक : 2021-23

अनामिका

सकलडीहा स्नातकोत्तर महाविद्यालय

सकलडीहा, चन्दौली-232109 (उ.प्र.)

'C' Accredited by NAAC

Website : sakaldihapgcollege.ac.in | E-mail : spgcollege1965@gmail.com | Phone : 05412-297440

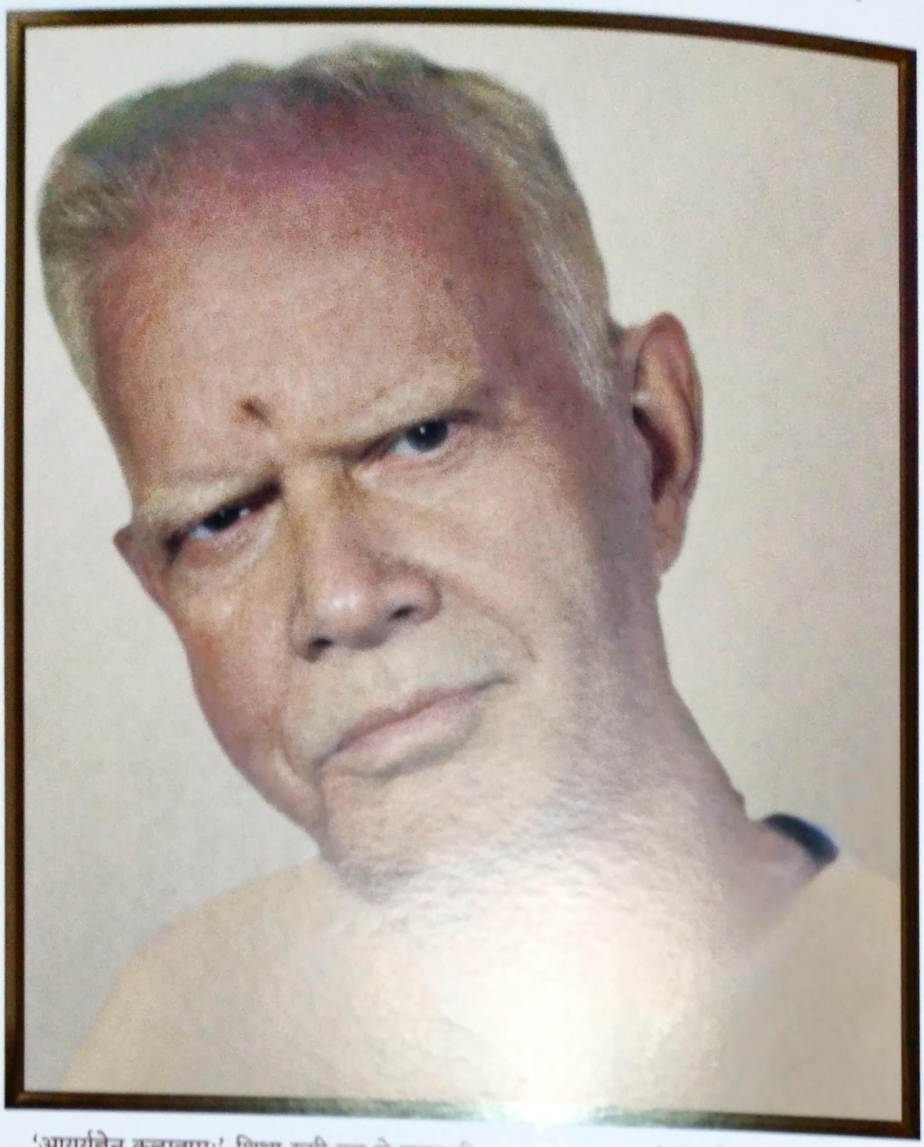

संस्थापक प्राचार्य स्वर्गीय पं. राम कमल पाण्डेय की कलम से-

'आयुर्यज्ञेन कल्पताम:'-शिक्षा रूपी यज्ञ से ज्ञानरूपी अमृत की कामना पूर्ण होती है।

उत्कृष्टता, समानता और समावेशिता ही सकलडीहा महाविद्यालय की स्थापना का आदर्श है, जिसकी प्राप्ति हेतु महाविद्यालय परिवार शैक्षणिक परिस्थितिकी तंत्र बनने की दिशा में समग्र सर्वव्यापी तथा समर्पण की भावना से प्रेरित है। संस्थान का उद्देश्य युवा मस्तिष्क को अपने वातावरण के साथ तालमेल बैठाकर सामाजिक परिवेश के प्रति संवेदनशील,अनुशासित और किसी भी चुनौती का सामना करने के लिए सदैव तैयार रखना है। हमारा मानना है कि महाविद्यालय में शिक्षक ही छात्र-छात्राओं के माता-पिता हैं और घर पर माता-पिता ही उनके शिक्षक होते हैं तथा छात्र-छात्रा ही भारत के भविष्य निर्माता हैं। हम सबका दायित्व है कि हम राष्ट्र को महान बनाने में पूरी क्षमता के साथ लक्ष्य को प्राप्त करें तथा छात्र-छात्राओं के उज्ज्वल भविष्य की तरफ जा रही यात्रा को तेज और आनंद से निरंतर परिपूर्ण करेंगे।

शुभकामनाओं सहित।

Prof. Vijendra Singh

अनामिका

संयुक्तांक 2021-23

•

संरक्षक/प्राचार्य

प्रो. प्रदीप कुमार पाण्डेय

•

•

प्रकाशक

सकलडीहा पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज

सकलडीहा, चन्दौली-232109 उ. प्र.

अनामिका

संयुक्तांक : 2021-23

सम्पादक
प्रो. दयानिधि सिंह यादव (हिन्दी-विभाग)

उप-सम्पादक
डॉ. अनिल कुमार तिवारी (राजनीति शास्त्र विभाग)

सम्पादक मण्डल
प्रो. प्रमोद कुमार सिंह, प्रो. उदय शंकर झा, प्रो. बिजेन्द्र सिंह, डॉ. उमेश चतुर्वेदी

संरक्षक/प्राचार्य
प्रो. प्रदीप कुमार पाण्डेय

प्रकाशक :

पत्रिका समिति
सकलडीहा पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज, सकलडीहा, चन्दौली (उ.प्र.)
सत्र : 2021-23

सर्वाधिकार सुरक्षित

सकलडीहा पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज
सकलडीहा, चन्दौली (उ.प्र.)

कलर साज-सज्जा :
वीर्पामन्दिर

मुद्रक :

विजय प्रकाशन मन्दिर प्राइवेट लिमिटेड
वाराणसी

राष्ट्रगान

जन-गण-मन अधिनायक जय हे
भारत भाग्य विधाता।
पंजाब-सिन्धु-गुजरात-मराठा
द्राविड़-उत्कल-बंग
विंध्य हिमाचल यमुना गंगा
उच्छल जलधि तरंग
तब शुभ नामे जागे, तब शुभ आशिष मांगे
गाहे तब जय-गाथा।
जन-गण-मंगलदायक जय हे भारत भाग्य विधाता।
जय हे, जय हे, जय हे, जय जय जय जय हे।

(गायन अवधि ५२ सेकेण्ड)

•

महाविद्यालय-वन्दना

अन्नत आलोक विश्वमूर्ते,
सफल हमारी ये साधना हो।
न दीनता हो न हो पलायन,
स्वदेश सेवा की भावना हो।
हमारे जीवन के पथ दुर्गम,
बने हमारे विकास साधन।
ये आत्मबल हो हमारा सम्बल,
हमारे जीवन की प्रेरणा हो।

•

कुलगीत

प्रफुल्ल शतदल-सा स्निग्ध सुरभित,
विराट विद्या सदन हमारा।
अगाध गरिमा-गरिष्ठ वीणा,
निनादिनी का यह नेत्र तारा।।

साहित्य - संस्कृति - कला - त्रिवेणी,
में स्नान नख-शिख सुरम्य वसुधा।
अतुल्य मेधा के जाह्नवी की,
यहाँ तरंगित अबाध धारा।।

विभिन्न विषयों की व्योमचुम्बी,
स्तुता विद्या स्नातकोत्तरीया।
सुरम्य ग्रामीण अंचलावृत्त,
सुज्ञान पादप का पुष्प प्यारा।।

विकास जलभर से सांद्र पंकिल,
प्रसून-परिमल से मौलि मण्डित।
उर-स्मरण योग्य दिव्य पंडित,
श्री कमलापति का तनय दुलारा।।

प्रफुल्ल शतदल-सा स्निग्ध सुरभित,
विराट विद्या सदन हमारा।
अगाध गरिमा-गरिष्ठ वीणा,
निनादिनी का यह नेत्र तारा।।

प्रो. ए.के. त्यागी
कुलपति
Prof. A.K. Tyagi
Vice Chancellor

महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ
वाराणसी-221002
Mahatma Gandhi Kashi Vidyapith
Varanasi-221002

शुभकामना सन्देश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि सकलडीहा पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज, सकलडीहा, चन्दौली अपनी वार्षिक पत्रिका सत्र २०२१-२३ 'अनामिका' का प्रकाशन करने जा रहा है। पत्र-पत्रिकाएं शैक्षिक संस्थानों के शैक्षणिक, रचनात्मक गतिविधियों एवं छात्र-छात्राओं की अभिव्यक्ति से समाज को परिचित कराती है जिससे शैक्षिक संस्था की कीर्ति में वृद्धि होती है।

आशा है कि पत्रिका में उत्कृष्ट कोटि की ज्ञानवर्धक एवं जनोपयोगी सामग्री का संकलन कर प्रकाशन किया जायेगा, जिससे छात्र-छात्राएं अपने उज्ज्वल भविष्य के निर्माण में प्रेरणा प्राप्त करेंगे।

मैं पत्रिका के सफल प्रकाशन की कामना करते हुए इस कार्य में लगे सभी सुधीजनों को साधुवाद देता हूँ।

(प्रो० ए०के० त्यागी)
कुलपति

सन्देश

प्रशासक,
सकलडीहा पी.जी. कॉलेज / जिलाधिकारी, चंदौली

प्रसन्नता की बात है कि महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका 'अनामिका' संयुक्तांक सत्र 2021-22 व सत्र 2022-23 का प्रकाशन होने जा रहा है प्रकाशन की सफलता के लिए हार्दिक शुभकामना व्यक्त करता हूँ।

शिक्षा मानव विकास गाथा का सशक्त माध्यम है उच्च शिक्षण संस्थाओं पर यह दायित्व और बढ़ जाता है निःसन्देह इसी उद्देश्य की प्राप्ति के लिए कुछ कर्म योगियों द्वारा इस महाविद्यालय की स्थापना सन् 1965 में की गई होगी जो सफलता के नए-नए आयाम को छूतीं जा रही है, मैं उन कर्मयोगियों का शत-शत नमन करता हूँ।

प्रशासक के रूप में मैंने प्रजातांत्रिक प्रणाली के आधार पर अपने दायित्वों का निर्वहन किया है, मेरा यह प्रयत्न रहा है कि महाविद्यालय का चतुर्दिक विकास हो इसके लिए मैं दृढ़ संकल्पित हूँ।

उच्च शिक्षण संस्थानों में छात्रों को विषय ज्ञान के साथ-साथ उनमें बौद्धिकता, सृजनात्मकता तथा रचनात्मकता का विकास किया जाता है निश्चित ही अनामिका इन उद्देश्यों की पूर्ति में प्रेरणादायी होगी।

पुनश्च अनामिका के प्रकाशन के शुभ अवसर पर महाविद्यालय के प्राचार्य, प्राध्यापक, कर्मचारी, छात्र-छात्राओं एवं संपादक मण्डल के साथ-साथ महाविद्यालय के विकास में जुड़े सभी लोगों के प्रति मैं हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ।

23/9

भवनिष्ठ
(निखिल टी. फुंडे)

शुभकामना सन्देश

'विद्ययाऽमृतमश्नुते' विद्या से अमरत्व की प्राप्ति होती है तथा मानव जीवन को सम्पूर्णता मिलती है जिसका दायित्व शिक्षण संस्थानों पर है यह तभी संभव है जब शिक्षक अभिभावक तथा छात्र सम्यक कर्तव्यों का निर्वहन करें। आज शिक्षा जगत के सामने गंभीर सार्थक चुनौतियाँ हैं। बाजारवादी तथा उपभोक्तावादी संस्कृति के बीच मानवीय मूल्यों को स्थापित करना है जिसके लिए शिक्षा के परम्परागत धारणाओं के विरासत पर शिक्षा में नवाचार का सृजन किया जा रहा है, राष्ट्रीय शिक्षा नीति इसका एक फलक है जिसमें दर्शन, शोध तथा चिंतन का वैश्विक स्तर पर एक संदेश है तो वहीं राष्ट्रीय और स्थानीयता का सोच भी है। नयी शिक्षा नीति में समेकित शैक्षणिक विकास के साथ-साथ आत्मनिर्भर एवं स्वावलंबी समाज का सपना भी है इसकी प्राप्ति चुनौती भरा है। शिक्षण संस्थाओं के अपने सीमित संसाधनों के साथ-साथ व्यवहारिक कठिनाइयाँ भी रही है जिसके समाधान के लिए सबको कमर्ठी व आशावान होना होगा तथा सभी को मिलकर काम करना होगा मेरा भी यही प्रयास रहा है।

हमारे लिए अत्यन्त गौरव की बात है कि हम आजादी का अमृत महोत्सव वर्ष मना रहे है जिसमें राष्ट्र नायकों के त्याग बलिदान, आदर्श तथा उनके विजन को याद कर रहे है जिसकी पुर्नस्मृति संजोने में महाविद्यालय में वर्ष पर्यन्त कार्यक्रम हुए जिससे जुड़े सभी लोगों को साधुवाद देता हूँ।

प्राचार्य पद पर कार्यभार ग्रहण किये हुए मेरा यह दूसरा सत्र है इस अवधि में मैंने टीम भावना के साथ महाविद्यालय का विकास तथा छात्रों को शैक्षणिक वातावरण एवं उनमें कौशल विकास हेतु भरसक प्रयास किया है। वर्तमान सत्र में पुनः नैक कराने का दायित्व आया है जिसके लिए महाविद्यालय परिवार पूरी तरह कटिबद्ध है।

शैक्षणिक संस्थानों में पत्रिका उनके बौद्धिक दर्पण को प्रतिबिम्बित करती है साथ ही छात्रों में लेखन शैली का विकास करने तथा उसमें प्रकाशित उत्कृष्ट कोटि के ज्ञान वर्धक लेख तथा समसामयिक विमर्श उनके ज्ञान क्षेत्र के धरोहर होते है, अनामिक निःसन्देह इस लक्ष्य को पूरा करेगी।

'अनामिका' के प्रकाशन के शुभ अवसर पर इसके संपादक प्रो. दयानिधि सिंह यादव, उप संपादक डॉ. अनिल कुमार तिवारी तथा सम्पादक मण्डल के सदस्य प्रो. प्रमोद कुमार सिंह, प्रो. उदय शंकर झा, प्रो. विजेन्द्र सिंह तथा डॉ. उमेश कुमार चतुर्वेदी को हार्दिक बधाई।

(प्रो० प्रदीप कुमार पाण्डेय)
प्राचार्य

सम्पादकीय

आओ अपने मन का हो लें

बड़े हर्ष की बात है कि 'अनामिका' का यह संयुक्तांक (2021-23) आपको प्राप्त हो रहा है। इस अवसर पर हमें आप (छात्र-छात्राओं) से अपने मन्तव्य साझा करने के साथ-ही-साथ आपको भी अपनी बात (प्रतिभा प्रसार करने) का एक अच्छा अवसर प्राप्त हो रहा है, आशा करता हूँ कि यह सिलसिला निरन्तर जारी रहेगा-

आओ अपने मन का हो लें
रात अँधेरी
दादुर बोलें
ऐसे में कैसे हम सो लें
आओ अपने मन का हो लें!

गौरतलब है कि आजादी के बाद भारत में पहली शिक्षानीति सन् 1986 में बनाई गई थी जो मुख्यतः लार्ड मैकाले की अंग्रेजी प्रधान शिक्षानीति पर आधारित थी। आज समय के साथ हमें यह महसूस हुआ कि 1986 की इस शिक्षानीति में कुछ खामियाँ हैं जिसमें बच्चा ज्ञान तो हासिल कर रहा है किन्तु यह ज्ञान उसके भविष्य में रोजगार के अवसर पैदा करने योग्य नहीं बन पा रहा है। अतः इन कमियों को दूर करने के लिए नई राष्ट्रीय शिक्षानीति-2020 लाने की आवश्यकता पड़ी।

नई राष्ट्रीय शिक्षानीति 2020, 21वीं शताब्दी की ऐसी पहली शिक्षानीति है जिसका लक्ष्य हमारे देश के विकास के लिए आने वाले आवश्यकता को पूरा करना है। कहना न होगा कि यह नीति भारत की परम्परा और उसके सांस्कृतिक मूल्यों को बरकरार रखते हुए 21वीं सदी की शिक्षा के लिए आकांक्षात्मक लक्ष्य, जिसके अन्तर्गत शिक्षा व्यवस्था, उसके नियमों का वर्णन सहित सभी पक्षों के सुधार और पुनर्गठन का प्रस्ताव रखती है।

वस्तुतः नवीन राष्ट्रीय शिक्षा नीति इस सिद्धान्त पर आधारित है कि शिक्षा से न केवल साक्षरता, उच्चस्तर की तार्किक समस्या-समाधान संबंधित संज्ञानात्मक क्षमताओं का विकास होना चाहिए बल्कि नैतिक, सामाजिक और भावनात्मक स्तर पर भी व्यक्ति का विकास होना चाहिए। निश्चित ही नई शिक्षा नीति भारत में एकीकृत शिक्षा प्रणाली को स्थापित करने तथा गांधी के बुनियादी शिक्षा के स्वप्न को साकार करने में मील का पत्थर साबित होगी। इसीलिए यह कहना यथोचित जान पड़ता है कि-

जुगनू ने पंगत तोड़ी है
तारों की
संगत में आकर
उजियारा सपना बन बैठा
कैसे हम जीवन रस घोलें
आओ अपने मन का हो लें!

पुनश्च पत्रिका के सम्पादन में जिन छात्र-छात्राओं, प्राध्यापकों, कर्मचारियों का सहयोग मिला है उन सभी को मेरा साधुवाद। पत्रिका के उपसम्पादक तथा सम्पादक मण्डल के सभी सदस्यों के प्रति मैं विशेष आभार प्रकट करता हूँ जिनके सहयोग के बिना पत्रिका का यह वर्तमान प्रारूप सम्भव ही नहीं था।

सत्र 2021-22 में (अपने उत्कृष्ट प्राध्यापन से छात्र-छात्राओं में बेहद लोकप्रिय) पूर्व प्राचार्य डॉ. विजय कुमार पाण्डेय, डॉ. शिवसाहय सिंह यादव, प्रो. अरुण कुमार उपाध्याय एवं डॉ. प्रदीप कुमार श्रीवास्तव, श्री अजीत कुमार मिश्रा (लिपिक), श्रीमती कांति देवी (परिचारक) सेवा मुक्त हो गये, सेवामुक्ति के बाद इन सभी महानुभावों का शेष जीवन मंगलमय हो, इस निमित्त मैं उनके प्रति अपनी हार्दिक शुभकामना व्यक्त करता हूँ।

(प्रो० दयानिधि सिंह यादव)
सम्पादक

विषय क्रम/Index

क्र.सं.	शीर्षक	लेखक/योगदानकर्ता	पृष्ठ संख्या
	संदेश		iii-vi
	सम्पादकीय		vii
1.	कैसे राह पर लाएँ समस्याग्रस्त युवा मन को?	–प्रो. प्रदीप कुमार पाण्डेय	09
2.	गाँधी चिन्तन में पर्यावरणीय सोच	–प्रो. अरुण कुमार उपाध्याय –डॉ. अनिल कुमार तिवारी	12
3.	भौगोलिक शोध में मानचित्र कला तकनीकों की उपादेयता एवं प्रासंगिकता	–प्रो. महेन्द्र प्रताप सिंह	16
4.	मनोविज्ञान विषय एवं करियर विकल्प	–डॉ. सीता मिश्रा	19
5.	जलवायु परिर्वन एवं ग्लोबल वार्मिंग	–डॉ. योगेन्द्र तिवारी	21
6.	मानव समाज में गृह विज्ञान की बढ़ती उपयोगिता : एक अध्ययन	–मीनू जायसवाल	25
7.	Colon Classification in India	–Ajay Kumar Yadav	26
8.	बजट एक अवलोकन	–दीपक दुबे	33
9.	बेटी	–प्रीति कुमारी	35
10.	स्वाधीनता के बाद भारतीय नारी का स्वरूप	–सरिता शर्मा	36
11.	कोई अर्थ नहीं	–रामधनी पाण्डेय	37
12.	बढ़ती हिंसा का क्या हो समाधान?	–बार्ष्णेय प्रसाद	38
13.	शायरी	–श्रेया सेठ	40
14.	वातावरण	–डॉ. अभय कु. वर्मा	40
15.	कविता	–वर्तिका पाण्डेय	41
16.	अनमोल जिंदगी	–अमित कुमार पाल	41
17.	कविता	–शुभांगी सोनकर	42
18.	लोग कहते है	–रेहासत अली	42
19.	महिला सशक्तिकरण	–अंजु कुमारी	43
20.	भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति	–विनय कुमार गुप्ता	44

21.	कविता	–सन्तोष कुमार	45
22.	कविता	–कोमल सिंह	47
23.	मेरा-देश	–विनोद विश्वकर्मा	47
24.	आत्ममंथन	–आसिफ अंसारी	48
25.	विक्रम बेताल की रहस्यमयी कहानियाँ	–शिवसागर	49
26.	कविता (राष्ट्रभक्ति)	–बबीता मौर्या	50
27.	माँ का प्यार और आशीर्वाद	–ज्योति राय	50
28.	कविता	–अजीत विश्वकर्मा	51
29.	आखिर किसके नहीं होते दो चेहरे?	–विश्वजीत कुमार	52
30.	शायरी	–सोनम पाण्डेय	53
31.	सुविचार	–मोनाली	53
32.	कविता	–दीक्षा गुप्ता	54
33.	गाँधी जी की अनमोल विचार	–रानी कुमारी	55
34.	एक माँ का संघर्ष	–साधना	56
35.	निबन्ध	–सतीश सिंह	56
36.	कविता	–डाली कुमारी	57
37.	कलियों को खिल जाने दो	–अमन कुमार राय	58
38.	मेरी माँ	–अंजली मौर्या	59
39.	कविता (कर्त्तव्य बोध)	–तनुष्का यादव	59
40.	देश-भक्ति शायरी	–नियामत अली	60
41.	माँ तो आखिर माँ होती है	–चाँदनी राय	61
42.	शायरी	–आदर्श कुमार मौर्या	61
43.	O Time!	–Vinay Kumar Yadav	61
44.	संघर्ष ही जीवन है	–डिम्पल कुमारी	62
45.	इंसान	–कुमारी वैशाली	63
46.	स्वामी विवेकानन्द के विचार	–रीना यादव	64

अनामिका

47.	हर महिला को जरूर पता होने चाहिए अपने 5 कानूनी अधिकार	–पूजा सिंह	65
48.	पेड़ हमारे साथी हैं	–शान्या मौर्या	66
49.	नारी	–पूजा त्रिपाठी	66
50.	एक सवाल	–निशा मौर्या	66
51.	अपना कॉलेज क्या है	–कुलदीप सिंह चौहान	67
52.	शिक्षक	–आराधना सिंह	67
53.	चिंतन और चरित्र	–प्रिन्स खरवार	68
54.	बचपन	–निधि कुमारी	69
55.	महिला सशक्तिकरण के उपाय	–प्रीति कुमारी –सौम्या यादव	70
56.	महाविद्यालय से सम्बन्धित महत्वपूर्ण गतिविधियाँ एवं जानकारियाँ		72

ऋषिकेश कुमार भारती

छात्रसंघ अध्यक्ष : सत्र 2021-22

छात्रसंघ (सत्र 2021-22) के समस्त पदाधिकारियों की ओर से
वार्षिक पत्रिका 'अनामिका' के प्रकाशन पर हार्दिक शुभकामनाएँ

प्रदीप यादव
छात्रसंघ उपाध्यक्ष

राहुल कुमार
महामंत्री

आलोक कुमार गुप्ता
पुस्तकालय मंत्री

शुभम जायसवाल
कला संकाय मंत्री

विश्वजीत कुमार
शिक्षा संकाय मंत्री

कैसे राह पर लाएँ समस्याग्रस्त युवा मन को?

प्रो. प्रदीप कुमार पाण्डेय, *प्राचार्य*

आज की युवा पीढ़ी का सच है– सब कुछ ही पलों में हासिल कर लेना। सूचना क्रान्ति के इस जमाने में वे जिन्दगी को कम्प्यूटर के माउस के समान मानने लगे हैं कि क्लिक किया और मनचाही चीजें स्क्रीन पर आ गईं, परन्तु जिंदगी कम्प्यूटर के समान नहीं है। इसका सच कुछ और है। जीवन जिन्दगी एक पहेली है। और इसे बूझे बगैर इसका पार नहीं। इसे जितना समझो उलझने उतनी बढ़ती जाती हैं। आज के युवा इस पहेली को पार किए बगैर सब कुछ पा लेना चाहते हैं। पाने में सर्वोपरि हैं। किसी भी प्रकार से पैसा कमाना। कम समय में अधिकतम अर्थ उपलब्धि इनका सपना है।

आज का युवा बहुत कुछ पाना चाहता है। बहुत कुछ पाना कोई बुरी बात नहीं हैं, परन्तु वह बहुत कुछ केवल पैसे के बलबूते पाने की चाहत रखता है, इसलिए उसके लिए पैसा अर्थात् अर्थ का सर्वोपरि मूल्य है। वह किसी भी रास्ते से किसी भी प्रकार से और कुछ भी करके पैसा कमाना चाहता है। इस पैसे के लिए वह अपना सर्वस्व मूल्य चुकाने के लिए हिचकता नहीं है। पैसे के सामने वह जीवन के सारे मूल्य, मानदंड एवं नैतिकता को ताख में रख देना चाहता हैं। कैसे भी उसे पैसा चाहिए। अर्थ की चकाचौंध में चुँधियाता युवा मन का सबसे बड़ा विचार है– अर्थ-चितन और सबसे बड़ा आदर्श है– संपदावान, धनवान होना।

अर्थ की कीमत एवं मूल्य आदिकाल से रहा हैं। आज ही उसका मूल्य है, ऐसी बात नहीं है। शाश्वत भारतीय संस्कृति में इसे उच्च स्थान में प्रतिष्ठित किया गया है, परन्तु यहाँ पर अर्थ को नीति, मर्यादा और मूल्यों के साथ जोड़कर देखा गया है। केवल अर्थ की महत्ता नहीं दरसाई गई है, अर्थ को धर्म के बाद स्थान मिला है। धर्म अर्थात् संवेदनशीलता और नैतिक मूल्यों की स्थापना, इसलिए जो व्यक्ति इन मूल्यों का अधिकारी है, वही अर्थ की समुचित महत्ता को समझता, जानता और उसका सदुपयोग करता है। इसी कारण अपनी संस्कृति में अर्थ को समाज को संपदा मान कर इसे सुरक्षित एवं संरक्षित कर दिया गया। इन नैतिक कवचों से सुरक्षित रहने की वजह से अर्थ का अनर्थ नहीं होता था।

आज की युवा पीढ़ी को अपने सांस्कृतिक मूल्यों से कोई लेना-देना नहीं है। इनकी नजर में वे सारी बातें जो उनकी अर्थ उपलब्धि की राह में रोड़ा बनती हैं, फिर वे चाहे कितनी भी श्रेष्ठ एवं श्रेयस्कर क्यों न हों, व्यर्थ है। वह अपनी राह में आने वाले इन जीवन मूल्यों को भी रोड़ा मानने लगा है। जब विचार इसी दायरे में इतना संकीर्ण हो चुका हो तो फिर सारे मूल्यों का अवमूल्यन तो होगा ही। युवाओं के मन में राष्ट्र को समर्पित बलिदानियों के प्रति अब सम्मान कहाँ, जिन्होंने अपनी पूरी जवानी को केवल और केवल राष्ट्र के लिए निछावर कर दिया था। एक वे थे, आज एक ये हैं। इससे समाज व राष्ट्र तो प्रभावित होगा ही।

युवाओं को राष्ट्र का मजबूत एवं सुदृढ़ आधार माना जाता है। किसी भी राष्ट्र के विकास में एवं पतन में इन्हीं की अहम भूमिका होती है। ये यदि जुट जायँ तो पत्थर में सोना पैदा कर दें और ये यदि लुट जायँ तो समृद्ध राष्ट्र भी चन्द चीजों के लिए मोहताज हो जाएगा। जब युवा शक्ति राष्ट्र को प्रभावित कर सकती है, तो फिर समाज परिवार या व्यक्ति कैसे अप्रभावित रह सकते हैं। युवा हृदय के सरताज सुभाषचंद्र बोस ने युवाओं को शक्ति के सदृश मानकर कहा कि युवा शक्ति ऐसी प्रचंड वायु है, जो जहाँ चलेगी तूफान खड़ा कर देगी। परतंत्रता की बेड़ियों में कराहती भारत माता की टीस को जब हमने सुना और अपनी माँ को मुक्त करने के लिए कटिबद्ध हो गये, तो इसका परिणाम जगत् विख्यात है।

आज भी सूचना-क्रांति भारत में लाकर और भारत को

विकासशील से विकसित राष्ट्र के रूप में समृद्ध करने के प्रयास में युवाओं के योगदान को भुलाया नहीं जा सकता। अर्थ से राष्ट्र में समृद्धि आती है, व्यक्ति और समाज सम्पन्न होते हैं। अपने देश में यह संपन्नता दिन दूनी-रात चौगुनी आ रही है और इसके पीछे भी इन्हीं युवाओं का कठोर एवं कठिन श्रम है। इसे नजर अन्दाज नहीं किया जा सकता है। एक बात और भी है। योग मनोविज्ञान की मान्यता है कि युवाओं की उम्र में पैसे का आकर्षण अत्यन्त प्रबल होता हैं। उम्र के इस इस पड़ाव में अनेक आकर्षणों में यह प्रबलतम आकर्षण है, पद एवं प्रतिष्ठा की बात तो पैसे के पश्चात् पनपती है। जब कि अपार संपदा अर्जित कर लेता है तभी उसके मन में फिर प्रतिष्ठा उमगती हैं। युवा मन अर्थ-आकर्षण में डूबा रहता है, परन्तु यह इतना भी इसमें न डूबे कि सब कुछ बिसर जाए।

आज की युवा पीढ़ी अपनी पूरी शक्ति और सामर्थ्य के साथ धनोपार्जन में जुटी हुई है और यह किसी कीमत पर उपलब्ध करना चाहता है। इसी कारण से अब पिछले डाक्टर्स, इंजीनियर्स, वैज्ञानिक जैसे तमाम प्रोफेशनल कोर्सों के प्रति आकर्षण कम हुआ है। कम्प्यूटर कोर्स तथा एम.बी.ए. कोर्स आदि एकाएक चरम पर इसलिए पहुँच गये हैं कि इन्हें करने के पश्चात् अच्छे पैसे वाली नौकरी आसानी से कहीं भी लग जाने की संभावना रहती है। अब तो अनेक संभावनाएँ हैं, अनगिनत पहलू हैं, चाहे वे किसी को अपनाएँ। मनोवैज्ञानिकों के सर्वेक्षण से पता चलता है, कि आज का युवा अधिकतम पैसा कमाना चाहता है, फिर इसके लिए उनकी पढ़ाई ही क्यों न प्रभावित हो या उसके परिवार को इस पर क्यों न एतराज हो, केवल एक ही धुन है– पैसा कमाना।

अधिकतम कम्पनियाँ नौकरी के रूप में युवाओं को अधिक प्रश्रय एवं प्राथमिकता प्रदान करती हैं। इसी वजह से बरिस्ता, काफी हाउस, मैकडोनाल्ड, फाइव स्टार होटल, विदेशी रेस्तराँ, साफ्टवेयर कम्पनियाँ, मल्टीनेशनल बैंक आदि में अच्छी हिन्दी-अंग्रेजी बोलने वाले आकर्षक युवा पीढ़ियों का जमघट-सा हो गया है। इसके अलावा छोटे स्तर पर जैसे मोबाइल गैलरियाँ, काल सेन्टर्स, पेट्रोल पंप, मॉल आदि में काम करने वाले अधिकतर युवा हैं। कमाने की कोई उम्र नहीं होती है, जब भी मौका मिले कमाना चाहिए, क्योंकि पैसे से ही जिन्दगी को बेहतर तरीके से जिया जा सकता है।

इन युवाओं के मन में सिर्फ पैसा है, जो किसी प्रकार से मिल जाये। वे रातो रात दुनिया के सबसे बड़े अमीरों की श्रेणी में शुमार हो जाएँ। मेट्रो शहरों से ग्रेजुएट होने के बाद या पहले ही कहीं छोटी-मोटी पार्ट टाइम नौकरी तलाशने में लगते हैं और इसके बाद यदि वक्त ने संग-साथ दिया तो किसी प्रोफेशनल कोर्स में दाखिला ले लेते हैं। यह है वर्तमान पीढ़ी का सत्य, जो बताता है कि इसके लिए पढ़ाई का महत्त्व पैसे कमाने से कभी भी अधिक नहीं है। युवाओं की इस बदलती मानसिकता से अधिकतर अभिभावक परेशान एवं चिंतित हैं। चिंतित होना भी स्वाभाविक है; क्योंकि इसकी कच्ची उम्र व मानसिकता के वजह से कभी भी भटकाव के भँवर में फँस सकते हैं और कई फँसते भी हैं।

मनोवैज्ञानिक इस बात से एकमत हैं कि अपनी पढ़ाई हेतु यदि आर्थिक संकट उत्पन्न हो तो उसे पूरा करने के लिए पार्ट टाइम नौकरी करना बुरी बात नहीं है, क्योंकि ऐसी स्थिति में ध्येय एवं लक्ष्य पढ़ाई पर टिका रहता है। इससे युवाओं के मन-मस्तिष्क में किसी प्रकार का अपराध बोध नहीं पनपता। ठीक इसके विपरीत मौज-शौक हेतु पढ़ाई में कम एवं नौकरी में अधिक ध्यान देने पर अनेक समस्याएँ खड़ी हो जाती हैं। मनोवैज्ञानिक एवं काउन्सलर मानते हैं कि आजकल ऐसे युवाओं में कुंठा, तनाव, अपराध बोध, आक्रमकता ईर्ष्या, द्वेष आदि मनोविकार अधिक पनपते हैं, क्योंकि इनका उद्देश्य ठीक नहीं होता है, जो उनके अन्दर एक गहरे अपराध बोध को जन्म देता है। इससे इनका व्यक्तित्व विकारग्रस्त हो जाता हैं। इस प्रकार युवा पीढ़ी की भटकन में अनेक प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष कारण समाहित हैं।

इस लेख में तो केवल उनकी समस्या की छोटी-सी झलक ही दिखाई गई है। ऐसी तमाम समस्याओं से ग्रस्त है युवा मन। इन्हें फिर से सन्मार्ग पर ले चलने के लिए भागीरथ प्रयास की जरूरत है। इनकी दिशा एवं दशा को परिवर्तित करने के लिए अथक प्रयास की आवश्यकता है, जो सबके समवेत व संगठित योगदान से ही संभव है। सर्वप्रथम गहरी संवेदनशीलता तथा समस्या को समझने एवं निदान खोजने की पैनी दृष्टि की जरूरत है। गहरी संवेदनशीलता इसलिए, क्योंकि भटकाव का मूल कारण इसका अभाव है।

अपनापन व आत्मीयता के अभाव में अनेक विकृतियाँ पनपने लगती हैं। विकृतियों की अगर चीरफाड़ की जाए तो इसी का घोर अभाव परिलक्षित होता नजर आता है। दूसरी बात है युवा मानसिकता एक अबूझ पहेली के समान होती है। चूँकि यह सतत एवं चरम विकासशील व्यवस्था है, इसलिए इसमें जटिलता का आना स्वाभाविक है। इस जटिलता का यदि समुचित ध्यान न रखा जाए तो समस्याएँ तो पनपेंगी ही। इसका पनपना बड़ी बात नहीं है, किन्तु इसका जम जाना घातक है। इसलिए दीर्घकालावधि तक ये स्थायी टिक न जायें इसके लिए एक ऐसी पारखी नजर का होना आवश्यक है, जो बीच-बीच ये इसका ऑपरेशन करके इनके मानसिक घाँवों में स्नेह की मरहम-पट्टी लगा सके। यदि कहीं या किसी स्थान पर ऐसी व्यवस्था बनाई जा सके तो युवा मन की भटकनों को थाम कर इनकी अपारशक्ति को सृजनशीलता में उँडेला जा सकता है।

युवा राष्ट्र की आवश्यकता हैं। व्यक्ति एवं राष्ट्र के समुचित व समग्र विकास के लिए एकांगी नहीं, वरन बहुआयामी दृष्टिकोण एवं कार्यकुशलता की जरूरत हैं। पैसा तो चाहिए और यह मिलेगा भी, परन्तु ध्येय ऊँचा एवं विचार उत्कृष्ट होना चाहिए। युवाओं के लिए पैसे से अधिक फौलादी चरित्र एवं चट्टानी मनोबल की जरूरत अधिक है। इसके बलबूते घोर अभाव में आसमान की सुदूर बुलंदियों को पाया जा सकता है। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम इसकी ज्वलंत मिसाल है। आज फिर से इस राष्ट्र को ऐसे ही चरित्रवान, श्रमशील एवं विवेकवान युवाओं की आवश्यकता है। इसे युग की माँग समझकर अवश्य ही पूरा करना चाहिए।

●

हमारी कविता — बिन्दा पाण्डेय

असुरक्षा

करत-धरत बीति गइले दिनवा
डर लागऽता, साँझ देखि असमनवा
डर लागऽता

फुलवा देखि के सभे मोहाइल
फलवा खाई के सभे अघाइल
छँहवा में हमरे के ना छँहाइल
डर लागऽता, अब बटाई मोर तनवा
डर लागऽता

तपत सूरज देखि नाहीं डेरइनी
आन्हीं अवरी बरखा में सदा लहरइनी
जिनगि के साँझ देखि भयाइल बा मनवा
डर लागऽता, अब बटाई मोर तनवा
डर लागऽता

मोरे गोदिया जे खेलल ओल्हा-पाती
काँच-पाक फलवा तूरल संग ले संघाती
अन्त समय में देखि उनहीं के समनवा
डर लागऽता, अब बँटाई मोर तनवा
डर लागऽता।

प्रस्तुति : शिवपूजन सरोज